(धर्म दो चीज़ों पर आधारित है)

लेखः

शैख मोहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब (१२०६हिजरी)

व्याख्याः

शैख अ़ब्दुर्रहमान बिन ह़सन बिन मोह़म्माद बिन **अब्दुल वह्हाब** (१२५८हिजरी)

رحمهما الله تعالى

संग्रहण एवं अवधानः

शैख माजिद बिन सोलेमान अलरसी

शौव्वाल **१४३३** हिजरी

الترجمة الهندية لرسالة: (أصل الدين وقاعدته أمران) للشيخ محمد بن عبد الوهاب رحمه الله، وشرحها لحفيده الشيخ عبد الرحمن بن حسن بن محمد بن عبد الوهاب رحمه الله.

पुस्तक का विवरण

पुस्तक का नाम: (धर्म दो चीज़ों पर आधारित है)

लेखक: शैख मोहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब

व्याख्या: शैख अ़ब्दुर्रहमान बिन ह़सन बिन मोह़म्माद बिन अब्दुल वह्हाब

प्रकाशन वर्ष: 1442 हिजरी – 2021 इसवी

ईमेल: binhifzurrahman@gmail.com

الكتاب منشور في موقع صيد الفوائد و إسلام هاوس

https://islamhouse.com/hi/main/

http://www.saaid.net/book/list.php?cat=92

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानर्रह़ीम

शैख मोह़म्मद बिन **अब्दुल वह्ह़ाब** [1]रह़िमहुल्लाहु फरमाते हैंः

इस्लाम धर्म दो चीज़ों पर आधारित हैः

प्रथमःएक अकेले अल्लाह की प्रार्थना का आदेश देना,उसके लिए तैयार करना,ऐसा करने वालों से मित्रता रखना,और इसे छोड़ देने वालों को काफिर मानन।

द्वितीयःअल्लाह की प्रार्थना में शिर्क(बहुदेववाद)से डरना,इस विषय में कठोर व्यवहार अपनाना,ऐसा करने वालों से शत्रुता रखना,और बहुदेववादियों को काफिर मानना।

इस विषय में विरोध करने वालों के अनेक प्रकार हैंः

सबसे बड़ा विरोधी वह है जो उपरोक्त समस्त मामलों में विरोध करे।

कुछ लोग एक अल्लाह की पूजा तो करते हैं,किंतु शिर्क(बहुदेववाद) का खंडन नहीं करते और न बहुदेववादियों को शत्रु मानते हैं।कुछ लोग ऐसे हैं जो बहुदेववादियों को शत्रु मानते हैं,किंतु उन्हें काफिर नहीं मानते।

---

[1]जब बारवीं शताब्दी हिजरी में अ़रब प्रायद्वीप के अंदर इस्लाम का नाम व निशान लुप्तहो गए तो शैख मोह़म्मद ने नवीकरण का काम किया,उनके माध्यम से अल्लाह ने इस्लाम को जीवित किया और आज तक जीवित है,उनसे और उनकी पुस्तकों से लाभ पहुंचाया ,अ़क़ीदा(आस्था) से संबंधित उनकी बातें उनकी पुस्तकों में वर्णित हैं,शैख मोह़म्मद का जन्म1115 हिजरी में हुआ और उनकी मृत्यु 1206 हिजरी में हुई,आप के पश्चात आने वाले अ़रब प्रायद्वीप के समस्त मुस्लिम विद्वानोंने आप(के ज्ञान एवं कार्यों) से लाभ उठाया और आज तक लाभार्थी हो रहे हैं।

आपकी जीवनी के लिए देखेंः"ओलमाए नजद खेलाल समानियत कुरून"लेखकःशैख अब्दुल्लाह बिन अब्दुर रह़मान अलबिसाम,तथा यह पुस्तक भी अवश्य देखेंः"अक़ीदतुश्शैख मोह़म्मद बिन **अब्दुल वह्ह़ाब** अलसलफिया"लेखकःडाकटर सालैह बिन अब्दुल्लाह अलमाबूद।

आपकी एक व्यापक जीवनी आपके पोते शैख अब्दुल्लतीफ बिन अब्दुर रह़मान बिन ह़सन बिन मोह़म्मद बिन **अब्दुल वह्ह़ाब** रहीमहुल्लाहु के कलम से अस्तित्व में आई जो"मजमूअतलरसाइल व अलमसाइल अलनजदिया" (3/387-429) और "अलदोरर अलसुन्निया फी अलअजविबा अलनजदिया" (1/372-439)में मौजूद है।

कुछ लोग ऐसे हैं जो तौह़ीद(एकेश्वरवाद)से न प्रेम रखते हैं और न घृणा करते हैं।

कुछ लोग एकेश्वरवादियों को काफिर कहते हैं और यह गुमान रखते हैं कि एकेश्वरवाद नेक लोगों की गाली है।

कुछ लोग शिर्क(बहुदेववाद) से न तो घृणा रखते हैं और न ही प्रेम।

कुछ लोग न शिर्क को जानते हैं और न उसका खंडन करते हैं।

कुछ लोग न तौह़ीद(एकेश्वरवाद) से अवज्ञत हैं और न उसका खंडन करते हैं।

और कुछ लोग-जोसर्वाधिक खतरनाक प्रकार के लोग है-एकेश्वरवाद पर अ़मल करते हैं,किंतु उसके महत्व से अज्ञात हैं,एकेश्वरवाद को छोड़ने वालों से न घृणा रखते हैं और न उन्हें काफिर मानते हैं।

कुछ लोग शिर्क(बहुदेववाद) से दूर रहते हैं,उससे घृणा रखते हैं,किंतु उसकी खतरनाकी से अज्ञात होते हैं,बहुदेववादियों को न अपना शत्रु मानते हैं और न उन्हें काफिर कहते हैं।

ये समस्त विरोधी उस धर्म के विरुद्ध कार्य करते हैं जिसके साथ पैगंबरों को भेजा गया था।अल्लाह सबसे बड़ा ज्ञानी है।[2]

[2]लेखक रह़िमहुल्लाहु का कथन समाप्त हुआ,यह कथन"अलदोरर अलसुन्निया फी अलअजविबा अलनजदिया"2/22 में मौजूद है।

व्याख्याः

शैख अब्दुर रह़मान बिन ह़सन[3]रह़िमहुल्लाहु तआ़ला अपने दादा शैख मोह़म्मद बिन अब्दुलवहाब रह़िमहुमुल्लाहुतआ़ला के उपरोक्त कथन की व्याख्या करते हुए लिखते हैंः

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

आप रह़ीमहुल्लाहु तआ़ला ने फरमायाः

इस्लाम धर्म दो चीज़ों पर आधारित हैः

---

[3]आप शैख अब्दुर रह़मान बिन ह़सन बिन शैख मोह़म्मद बिन **अब्दुल वह़्हाब** रहिमहुल्लाहु तआ़ला हैं,आपका जन्म 1196 हिजरी में दरईद के अंदर हुआ,अपने दादा शैख मोह़म्मद बिन **अब्दुल वह़्हाब** के घर में आपका पालन पोषण हुआ,आपने अपने दादा और चाचा के पास तौह़ीद और फिक़्ह का शिक्षा प्राप्त किया,तथा मिस्त्रके कुछ विद्वानों से भी ह़दीस का पाठ पढ़ा,जैसे शैख ह़सन अलकोवैसीनी,शैख अब्दुर रह़मान अलजुबराती और शैख अब्दुल्लाह बासूदान,इसी प्रकार एलजीरिया के मुफती शैख मोह़म्मद बिन मह़मूद अलजज़एरी अलह़नफी अलअसरी के पास भी ह़दीस पढ़ी और उन शैखों(विद्वानों) ने आपको अपनी समस्त मरवियात(विवरणों) का उनकी सनद (स्त्रोत)से रिवायत करने की अनुमति भी प्रदान कर दी।

शैख अब्दुर रह़मान ने मिस्त्रके अन्य शैखों(विद्वानों)से भी ज्ञान प्राप्त किया जो नह़व,क़िराअत और अन्य विषयों के विशेषज्ञ थे।

इसी प्रकार शैख अब्दुर रह़मान से भी अनेक छात्रों ने ज्ञान प्राप्त किया,जिनमें आपके पुत्र शैख अब्दुल्लत़ीफ उल्लेखनीय स्थान रखते हैं।

शैख अब्दुर रह़मा के अनेक लेख हैं,उनमें से प्रसिद्ध "फतहुलबारी"है,जोकि उनके चचेरे भाई शैख सोलेमान बिन अब्दुल्लाह बिन मोह़म्मद बिन **अब्दुल वह़्हाब** की पुस्तक"तैसीरुल अ़ज़ीज़ अलह़मीद बेशरह़े किताबुत्तौह़ीद"का संक्षेप है,आपने किताबुत्तौह़ीद पर एक संदर्भ भी लिखा जो"कुर्रतो **ओयूनिलमोवह्हिदफी** तह़क़ीके दावतिल अंबिया वलमुरसलीन"के नाम से उपलपध है।

शैख अब्दुर्रह़मान ने अनेक अन्य पत्रिकाएं वएं पुस्तिकाएं भी लिखी हैं जो "अलदोरर अलसुन्निया मिनल अजविबते अलनजदिया"में मोजूद हैं।शैख रह़ीमहुल्लाहु का निधन 1285 हिजरी को हुआ,आपने अपने जीवन में इस्लाम की सहायता,लोगों को तौह़ीद(एकेश्वरवाद) की दावत एवं नजद आदि से शिक्र(बहुदेववाद) एवं बिदअ़त(नवाचार) की समाप्ति के लिए उल्लेखनीय भूमिका निभाई हैं।

आपकी जीवनी के लिए देखेंः"फतहुलमजीद"का प्राक्कथन,अनुसंधानःअशरफ बिन अब्दुलमक़सूद,यह जीवनी उनके पोते शैख इब्राहीम बिन मोह़म्मद बिन इब्राहीम बिन अब्दुर रह़मान बिन ह़सन रह़ीमहुल्लाहु ने लिखी है।

प्रथमःएक मात्र अल्लाह की पूजा का आदेश देना,उसके लिए तैयार करना,ऐसा करने वालों से मित्रता रखना,और इसे छोड़ देने वालों को काफिर मानना।

व्याख्याताः कुरान में इसके अनेक प्रमाण मोजूद हैं,जैसे अल्लाह तआ़ला का यह कथनः

﴿قل يا أهل الكتاب تعالوا إلى كلمة سواء بيننا وبينكم ألا نعبد إلا الله ولا نشرك به شيئا ولا يتخذ بعضنا بعضا أربابا من دون الله﴾ الآية[4].

अर्थातःआप कह दीजिए कि ए अहले किताब(यहूद व इसाई!)ऐसी न्याय वाली बात की ओर आओ जो हममें तुममें समान है कि हम अल्लाह तआ़ला के अतिरिक्त किसीकी पूजा न करें,न उसके साथ किसी को साझी बनाएं,न अल्लाह तआ़ला को छोड़ कर आपस में एक दूसरे को ही रब बनाएं।

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को आदेश दिया कि आप अहले किताब(यहूद एवं इसाई को) «لا إله إلا الله»के इसी अर्थ की दावत(न्योता)दें जिसकी दावत आपने अ़रब वासियों को दिया,कलमा «لا إله إلا الله»की व्याख्या अल्लाह ने इस कथन से की:"ألا نعبد إلا الله"हम अल्लाह तआ़ला के अतिरिक्त किसी की पूजा न करें"ألا نعبد"में «لا إله»का अर्थ पाया जाता है,जो कि अल्लाह के अतिरिक्त से प्रत्येक प्रकार की पूजा का खंडन करता है।

और कलमा ए तौहीद में «إلا الله»अपवाद है।

अतःअल्लाह तआ़ला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह आदेश दिया कि आप उन्हें केवल एक अल्लाह की पूजा करने और उसके अतिरिक्त प्रत्येक से प्रार्थना का खंडन करने की दावत(न्योता) दें,इस प्रकार की आयतें अनेक हैं,जिनसे यह अस्पष्टहोता है कि ओलूहियत(एकेश्वरवाद) का अर्थ प्रार्थना है,और प्रार्थना का निम्नतम भाग भी अल्लाह के अतिरिक्त के लिए उचित नहीं,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿وقضى ربك ألا تعبدوا إلا إياه﴾[5]

अर्थातः तेरा पालनहार साफ साफ आदेश देचूका है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी और की प्रार्थना न करना।

" قضى **"** का अर्थ हैःआदेश दिया एवं वसीयत(धर्मादेश) की,आयत की व्याख्या में दोनों कथन आए हैं और उनका अर्थ एक ही है।

अल्लाह के कथनःألا تعبدوا"**"**में«لا إله»का अर्थ पाया जाता है।

---

[4]سورة آل عمران: 64 .

[5]سورة الإسراء: 23 .

और" إلا إياه " में «إلا الله»का अर्थ पाया जाता है।

यह तौहीदे इबादत है और यही संदेशवाहकों की दावत है,उन्होंने अपने समुदाय से कहाः

﴿أن اعبدوا الله مالكم من إله غيره إياه﴾[6].

अर्थातःकि तुम सब अल्लाह की प्रार्थना करो,उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई परमेश्वर नहीं।

अतःसर्वप्रथम प्रार्थना में शिर्क(बहुदेववाद) का खंडन करना,शिर्क(बहुदेववाद) एवं मुशरिक(बहुदेववादियों)से मुक्ति प्रकट करना अवश्य है,जैसा कि अल्लाह तआ़ाला ने अपने खलील(मित्र) इब्राहिम अलैहिस्सलाम के प्रति फरमायाः

﴿وإذ قال إبراهيم لأبيه وقومه إنني براء مما تعبدون * إلا الذي فطرني﴾[7]

अर्थातःजबकि इब्राहिम ने अपने पिता से और अपने समुदाय से कहा कि में उन चीज़ों से मुक्त हूं जिनकी तुम प्रार्थना करते हो।सेवाए उस हस्ती के जिसने मुझे पैदा किया है।

इस लिए अल्लाह के अतिरिक्त जिसकी भी पूजा की जाती है,उसकी प्रार्थना से मुक्ति प्रकट करना अवश्य है।

अल्लाह ने इब्राहिम अलैहिस्सलाम के प्रति से और फरमायाः

﴿وأعتزلكم وما تدعون من دون الله﴾[8]

अर्थातःमें तुम्हें और जिन जिन को तुम अल्लाह तआ़ाला के अतिरिक्त पुकारते हो उन्हें भी सबको छोड़ रहा हूं।

अतःशिर्क(बहुदेववाद) एवं मुशरिक(बहुदेववादियों) से नाता तोड़ना अनिवार्य है वह इस प्रकार कि उनसे संबंध तोड़ दिया जाए।जैसा कि अल्लाह तआ़ाला इसको स्पष्ट करते हुए फरमाता हैः

﴿قد كانت لكم أسوة حسنة في إبراهيم والذين معه إذ قالوا لقومهم إنا برآء منكم ومما تعبدون من دون الله كفرنا بكم وبدا بيننا وبينكم العداوة والبغضاء أبدا حتى تؤمنوا بالله وحده﴾[9]

---

[6] سورة المؤمنون: 32 .

[7] سورة الزخرف: 26 – 27 .

[8] سورة مريم: 48 .

अर्थातः(मुसलमानो!)तुम्हारे लिए ह़जरत इब्राहिम में और उनके साथियों में सर्वोत्तम आदर्श है जबकि उन्होंने अपने समुदाय से स्पष्ट रूप में कह दिया कि हम तुमसे और जिन जिन की तुम अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करते हो उन सबसे बिल्कुल बरी है।हम तुम्हारे(आस्था)का खंडन करते हैं जबतक तुम अल्लाह के एक होने पर ईमान न लाओ हम में तुम में स्वेद के लिए शत्रुता एवं घृणा प्रकट होगई।

उनके साथियों का मतलब पैगंबर अलैहिस्सलाम हैं जैसा कि इब्ने जरीर ने उल्लेख किया है।

इस आयत के अंदर वे समस्त चीजें शामिल हैं जिन्हें हमारे शैख रहिमहुल्लाहु ने उल्लेख किया है,अर्थात एकेश्वरवाद की रूचि,शिर्क का खण्डन,एकेश्वरवादियों से मित्रता,और व्यक्ति को काफिर मानना जो तौहीद(एकेश्वरवाद) को छोड़ कर उसके विरुद्ध शिर्क(बहुदववाद) कर।क्योंकि जिसने शिर्क किया उसने तौहीद को छोड़ दिया,उसके लिए शिर्क एवं तौहीद एक दूसरे का विपरीत हैं,दोनों **इकठ्ठा** नहीं हो सकते,जब शिर्क पाया जाएगा तो तौहीद नहीं पाई जाएगी।

अल्लाह तआ़ला ने मुशरिकों(बहुदेववादियों) की परिस्थिति का उल्लेख करते हुए फरमायाः

﴿وجعل لله أندادا ليضل عن سبيله قل تمتع بكفرك قليلا إنك من أصحاب النار﴾[10]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला का साझी बनाने लगता है जिससे(औरों को भी)उसके मार्ग से बहकाए,आप कहदीजिए कि अपने कुफ़्र का लाभ कुछ दिन उठालो, (आखिर)तो नरक वालों में से होने वाला है।

अतःउसने प्रार्थना में साझी बना करके अल्लाह तआ़ला के साथ कुफ़्र किया,इस प्रकार की आयतें अनेक हैं,कोई भी व्यक्ति शिर्क का खंडन,उससे मुक्ति और उसके करने वाले को काफिर माने बेगैर एकेश्वरवाद नहीं हो सकता।

लेखक रहि़महुल्लाहु तआ़ला ने और फरमायाः

द्वितीयःअल्लाह की प्रार्थना में शिर्क (बहुदेववाद)से डरना,इस विषय में कठोर व्यवहार अपनाना,ऐसा करने वालों से शत्रुता रखना,और बहुदेववादियों को काफिर मानना।

तौहीद इसके बिना पूरा नहीं होसकता,यही संदशवाहकों का धर्म है,उन्होंने अपने समुदाय को शिर्क से डराया,जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

---

[9] سورة الممتحنة: 4 .

[10] سورة الزمر: 8 .

﴿ولقد بعثنا في كل أمة رسولا أن اعبدوا الله واجتنبوا الطاغوت﴾[11]

अर्थातःहमने प्रत्येक समुदाय में संदेशवाहक भेजा कि(लोगो!)केवल अल्लाह की पूजा करो और उसके अतिरिक्त समस्त प्रमेशवरों से बचो।

अल्लाह तआ़ला ने और फरमायाः

﴿وما أرسلنا من قبلك من رسول إلا نوحي إليه أنه لا إله إلا أنا فاعبدون﴾[12]

अर्थातःतुझसे पूर्व भी जो संदेशवाहक हमने भेजा उसकी ओर यही **वह़य** की कि मेरे अतिरिक्त कोई भी सत्य प्रमेश्वर नहीं,तुम सब मेरी ही प्रार्थना करो।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿واذكر أخا عاد إذ أنذر قومه بالأحقاف وقد خلت النذر من بين يديه ومن خلفه أن لا تعبدوا إلا الله﴾[13].

अर्थातःआ़द के भाई को याद करो जबकि उसने अपने समुदाय को अह़क़ाफ में डराया और निसंदेह उससे पूर्व भी डराने वाले गुज़र चूके हैं और इसके पश्चात भी यह कि तुम अल्लाह तआ़ला के अतिरिक्त किसी और की प्रार्थना न करो।

लेखक का कथनःअल्लाह की प्रार्थना में।

प्रार्थना एक व्यापक नाम है जिसमें समस्त ऐसे आंतरिक एवं **बाह्य** कार्य एवं कथन शामिल हैं जो अल्लाह तआ़ला को पसंद हैं।

लेखक का कथनःइस बात में कठोर बर्ताव अपनानाः

यह कुरान एवं ह़दीस में भी मौजूद है,जैसा कि अल्लाह ने फरमायाः

﴿ففروا إلى الله إني لكم منه نذير مبين * ولا تجعلوا مع الله إلها آخر إني لكم منه نذير مبين﴾[14]

---

[11] سورة النحل: 36 .

[12] سورة الأنبياء: 25 .

[13] سورة الأحقاف: 21 .

[14] سورة الذاريات: 50 – 51 .

अर्थातःतुम अल्लाह की ओर दौड़भागो (अर्थात पलटा),निसंदह में तुम्हें उसकी ओर साफ साफ डराने वाला हूं।अल्लाह के साथ किसी और को परमेश्वर ने बनाओ।निसंदेह में तुम्हें उसकी ओर से खूला डराने वाला हूं।

यदि कठोर व्यवहार न अपनाया जाता तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा(साथी)को क़ोरैश की वे समस्त क्रूरता एवं निर्दयता न सहनी पड़तीं जिनका विस्तृत उल्लेख सीरत की पुस्तकों में मौजूद है,आपने ही सर्वप्रथम मुशरिकों(बहुदववादियों)के धर्म को बूरा भला कहा और उनके भगवानों के अवगुणों एवं दुर्गणों को स्पष्ट किया।

लेखक रहीमहुल्लाहु का कथनःऐसा करने वालों से शत्रुता रखना।

जैसाकि अल्लाह का कथन हैः

﴿فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم وخذوهم واحصروهم واقعدوا لهم كل مرصد﴾[15]

अर्थातःमुशरिकों (बहुदववादियों) को जहां पाओ उनकी हत्या करदो,उन्हें गिरफतार करो,उनका घेराउ करलो और उनके ताक में हर घाटी में जा बैठो।

इस अर्थ की अनेक आयतें आई हैं,जैसे अल्लाह तआ़ला का कथन हैः

﴿وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين كله لله﴾[16]

अर्थातःतुम उनसे उस समय तक लड़ो कि उनमे फितना(आस्था की बिगाड़)न रहे और दीन अल्लाह ही का हो जाए।

इस आयत में फितना(प्रलोभ) का अर्थ शिर्क है।

अल्लाह तआ़ला ने अनेक आयतों में मुशरिक को कुफ़्र से चित्रित किया है,इसलिए मुशरिकों को काफिर मानना अनिवार्य है,यही कलमा ए तौहीद «لا إله إلا الله»का तक़ाजा है,इसका अर्थ उसी समय पूरा हो सकता है जब अल्लाह की प्रार्थना में साझी बनाने वाले को काफिर माना जाए,जैसा कि सही हदीस में आया हैः"जिसने لا إله إلا الله कहा और अल्लाह के अतिरिक्त

---

[15] سورة التوبة: 5 .

[16] سورة الأنفال: 39 .

जिनकी भी पूजा की जाती है,उन सब का इंकार किया तो उसका धन एवं प्राण सुरक्षित होगया और उसका हिसाब अल्लाह तआ़ाला पर है" ।[17]

आपका कथनः(अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी पूजा की जाती है,उनसब का इंकार किया)इंकार में ज़ोर है,उसका प्राण एवं धन इस इंकार के बिना सुरक्षित नहीं हो सकता,यदि उसने संदेह किया अथवा खंडन किया तो उसका धन एवं प्राण सुरक्षित नहीं होगा।

ये वे मामले हैं जिनसे तौह़ीद मुकम्मल होती है,क्योंकि ह़दीस के अंदर «لا إله إلا الله»का जिक्र अनेक कठिन प्रतिबंधों के साथ हुआ हैःज्ञान,निष्ठा,सत्य बोलना,विश्वास एवं संदेह से दूरी,मनुष्य उस समय तक **मोवह्हिद**(एकेश्वरवादी) नहीं हो सकता जब तक कि उसके अंदर ये समस्त गुण एवं विशेषताएं **इकठ्ठा**न होजाएं,वह तौह़ीद(एकेश्वरवाद) का आस्था रखे,उसे स्वीकार करे,उससे प्रेम रखे,उसी की खातिर मित्रता बनाए,ज्ञात हुआ कि हमारे शैख ने जिन चीज़ों का उल्लेख किया है,उनसे ही तौहीदे कामिल(संपूर्ण एकेश्वरवाद) प्राप्त होती है।

तथा लेखक रह़ीमहुल्लाहु ने फरमायाः

इस अध्याय में विरोध करने वालों के अनेक प्रकार हैं,सबसे बड़ा विरोधी वह है जो उपरोक्त समस्त चीज़ों में विरोध करे।

अतःशिर्क को स्वीकार करे और इसे अपना धर्म एवं आस्था बनाले,तौह़ीद(एकेश्वरवाद) का खंडन करे और इसे असत्य माने,जैसा कि अधिकांश लोगों का मामला है,इसका कारण यह है कि तौह़ीद का ज्ञान और उसके विरुद्ध कार्यों जैसे शिर्क करने,साझी बनाने,आत्मा के इच्छाओं का पालन करने और बाप दादाओं के मार्ग पर स्थिर रहने के जो प्रमाण कुरान एवं ह़दीस में आए हैं,उनसे अज्ञात होते हैं,बिल्कुल उसी प्रकार जिस प्रकार उनसे पूर्व संदेश्वाहकों के शत्रुओं की परिस्थिति थी,इसी आधार पर उन्होंने **मोवह्हिद**(एकेश्वरवादों) को छूट,धोका,आरोप एवं पापों से आरोपित किया,और उनका प्रमाण केवल यह थाः

﴿بل وجدنا آباءنا كذلك يفعلون﴾[18].

अर्थातःहम तो अपने बाप दादाओं को इसी प्रकार करते पाया।

---

[17]इसे मुस्लिमः23ने अबुमालिक अ़न अबीहे की सनद से वर्णित किया है।

[18]سورة الشعراء: 74 .

इसी प्रकार के लोगों ने और उनके पश्चात आने वाले उनके अनुयाईयों ने कल्मा ए तौहीद के साक्ष्यों,उसके **उद्देश्य**और इस धर्म का विरोध किया जिस पर यह कलमा आधिारित है और जिसके अतिरिक्त अल्लाह तआ़ाला किसी और धर्म को स्वीकार नहीं करता,वह इस्लाम धर्म है जिसके साथ अल्लाह तआ़ाला ने समस्त पैगंबरों एवं संदेश्वाहकों का भेजा,उनकी दावत इसी तौहीद(एकेश्वरवाद) पर केंद्रित थी,अल्लाह ने अपनी पुस्तक में उनकी जो घटनाओं का उल्लेख किया है,उनसे यह बिल्कुल आलोकित होजाता है।

लेखक रहीमहुल्लाहु ने और फरमायाः

कुछ लोग एक अल्लाह की पूजा तो करते हैं,किंतु शिर्क का खंडन नहीं करते और न मुशरकों को शत्रु मानते हैं।

व्याख्याताःयह बात मालूम है कि जो व्यक्ति शिर्क का इंकार नहीं करता वह तौहीद(एकेश्वरवाद) से न तो अवज्ञत होता है और न उस पर अ़मल करता है,आप यह जान चूके हैं कि तौहीद उस समय तक पूरा नहीं होता जबतक कि शिर्क का खंडन न किया जाए और आयत में वर्णित तागुत(असत्य परमेश्वर)का खंडन न किया जाए।

लेखक रहीमहुल्लाहु ने और फरमायाःकुछलोग एसे हैं जो मुशरिकों को शत्रु मानते हैं,किंतु उन्हें काफिर नहीं कहते।

उन्होंने भी «لا إله إلا الله»के प्रमाणों एवं तक़ाज़ो पर अ़मल नहीं किया,अर्थात शिर्क(बहुदेववाद) का खंडन नहीं किया और न मुकम्मल रूप से शिर्क(की गंभीरता) स्पष्ट होजाने के पश्चात भी इसको करने वाले को काफिर नहीं माना,सूरह अख़लास " قل يا أيها الكافرون" का यही विषय है और सूरह अलमुमतहिना में अल्लाह के कथनः" كفرنا بكم" (हम तुम्हारे आस्थाओं के इंकारी हैं)का भी यही अर्थ एवं सार है।

जिसने कुरान के साथ कुफ्र करने वाले को काफिर नहीं ठहराया उसने रसूलों की लाई हुई तौहीद(एकेश्वरवाद) और उसके तकाज़ों का विरोध किया।

इसके पश्चात लेखक रहीमहुल्लाह ने फरमायाःकुछलोग एसे हैं जो तौहीद से न प्रेम रखते हैं और न घृणा।

इसका उत्तर यह है किःजो व्यक्ति तौहीद(एकेश्वरवाद) से प्रेम नहीं रखे वह एकेश्वरवादी नहीं,क्योंकि तौहीद उस धर्म का नाम है जिसे अल्लाह तआ़ाला ने अपने बंदों के लिए पसंद फरमाया है,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः

﴿ورضيت لكم الإسلام دينا﴾[19]

अर्थातःतुम्हारे लिए इस्लाम के धर्म होने पर प्रसन्न होगया।

यदि वह उस चीज से प्रसन्न हो जिससे अल्लाह प्रसन्न हुआ,और उसपर अ़मल किया तो उसने उससे प्रेम किया,यह प्रेम अवश्य है क्योंकि इसके बिना मनुष्य मुसलमान नहीं होता और तौह़ीद के प्रेम के बिना इस्लाम का कल्पना नहीं किया जा सकता।

शैखुलइस्लाम[20]रह़ीमहुल्लाहु फरमाते हैंःअख्लास(निष्ठा)का मतलब अल्लाह से प्रेम करना और उसकी प्रसन्ता मांगना,जिसने अल्लाह से प्रेम किया उसने उसके धर्म से प्रेम किया,जिसने अल्लाह से प्रेम नहीं किया उसने धर्म से प्रेम नहीं किया,कलमा ए तौह़ीद से जो शर्तें लाजिम आते हैं,वे समस्त शर्तें इसी प्रेम पर लागू होते हैं।

इसके पश्चात लेखक रह़िमहुल्लाहु न फरमायाःकुछलोग शिर्क से न तो घृणा रखते हैं और न प्रेम।

व्याख्याताःजिसने एसा किया उसने इसका खंडन नहीं किया जिसका खंडन कलमा

«لا إله إلا الله»ने किया,अर्थात शिर्क और अल्लाह के अतिरिक्त जिन परमेश्वरों की पूजा की जाती है,उनका खंडन और उनसे मुक्ति प्रकट करना,ऐसा व्यक्ति वास्तव में पूरे तौर पर इस्लाम से ख़ारिज है,उसका धन एवं प्राण सुरक्षित नहीं,जैसाकि उपरोक्त ह़दीस से इसका प्रमाण मिलता है।

लेखक रह़ीमहुल्लाहु ने फरमायाःकुछलोग न शिर्क को जानते हैं और न उसका खंडन करते हैं।

व्याख्याताःजो व्यक्ति शिर्क को न जानता है और न उसका खंडन करता है,वह इसका इंकार नहीं करता,कोई व्यक्ति उस समय तक एकेश्वरवाद नहीं हो सकता जबतक कि शिर्क का खंडन न करे,शिर्क और मुशरिक से मुक्ति परकट न करे और उन्हें काफिर न माने,शिर्क से अज्ञात रह कर «لا إله إلا الله»के तक़ाज़ों को पूरा नहीं किया जा सकता,जो व्यक्ति इस कलमा का अर्थ और तकाजों एवं विषय पर अ़मल न करले,वह इस्लाम में थोड़ा भी प्रवेश नहीं कलमा ए तौह़ीद और उसके विष्य पर अ़मल नहीं किया,इस प्रकार के मनुष्य के अंदर थोड़ा भी

---

[19]سورة المائدة: 3 .

[20]इब्ने तैमिया रह़ीमहुल्लाहु

तौहीद नहीं पाया जाता,चाहे वह मौखिक रूप से «لا إله إلا الله»का माला ही क्यों न झपता हो,इस लिए कि वह इसके तक़ाजों एवं **उद्देश्य** से बिल्कुल अज्ञात एवं अपरिचित है।

तथा लेखक रहीमहल्लाहु तआ़ला ने फरमायाःकुछलोग न तौहीद से अवज्ञत हैं और न इसका इंकार करते हैं।

व्याख्याताःयह इससे पूर्व वाले ही के जैसा है,एसे लोग रचना के **उद्देश्य** से अज्ञात हैं,अर्थातःउस धर्म से अज्ञात हैं जिसके साथ अल्लाह ने संदेशवाहकों को भेजा,यो परिस्थिती उनलोगों के जैसा है जिनके प्रति अल्लाह ने फरमायाः

﴿إن هم إلا كالأنعام بل هم أضل سبيلا﴾[21].

अर्थातःवे तो बिल्कुल चौपायों जैसे हैं बल्कि उनसे भी अधिक भटके हुए हैं।

लेखक रहीमहुल्लाहु अधिक लिखते हैंःकुछलोग-जो सर्वाधिक खतरनाक प्रकार के हैं-तौहीद पर अ़मल करते हैं,किंतु उसके महत्व से अज्ञात हैं,तौहीद को छोड़ने वालों से न घृणा रखते हैं और न उन्हें काफिर मानते हैं।

लेखक रहीमहुल्लाहु ने फरमायाः(वे सर्वाधिक खतरनाक प्रकार के लोग हैं) इसका कारण यह है कि वे जिस पर अ़मल करते हैं उसके महत्व को नहीं जानते,अतःवे उन अनीवार्य एवं वजनी शर्तों पर अ़मल नहीं करते जिनसे उनकी तौहीद(एकेश्वरवाद) सही हो,जैसा कि आप जान चूके हैं कि तौहीद का तकाजा है कि शिर्क का इंकार किया जाए,उससे मुक्ति प्रकट की जाए,मुशरिकों को शत्रु माना जाए,और प्रमाण सिद्ध होजाने के बाद उनको काफिर माना जाए,एसे व्यक्ति की **बाह्य** परिस्थितीको देख कर मनुष्य धोखे का शिकार हो सकता है,क्योंकि वह(**बाह्य** रूपसे कलमा ए तौहीद का उच्चारण करता है किंतु) कलमा ए तौहीद के अंदर इंकार एवं साबित करने के जो तक़ाजे हैं,उनपर अ़मल नहीं करता।

लेखक रहीमहुल्लाहु ने और फरमायाःकुछलोग शिर्क से दूर रहते हैं,उसे नापसंद करते हैं,किंतु उसकी गंभीरता से अज्ञात होते।

---

[21] سورة الفرقان: 44 .

एसा व्यक्ति इससे पूर्व वाले से अधिक निकट है,किंतु यह शिर्क की गंभीरता से अज्ञात होता है,क्योंकि यदि वह उसकी गंभीरता से अज्ञात होता तो महकम(ठोस) आयतों के तक़ाज़ों पर अवश्य अ़मल करता,जैसा कि(इब्राहीम) खलील ने फरमायाः

﴿إنني براء مما تعبدون * إلا الذي فطرني﴾[22]

अर्थातःमें उन चीजों से बरी हूं जिनकी तुम पूजा करते हो।सिवाए उस हस्ती के जिसने मूझे पैदा किया है।

और फरमायाः

﴿إنا برآء منكم ومما تعبدون من دون الله كفرنا بكم وبدا بيننا وبينكم العداوة والبغضاء أبدا﴾[23].

अर्थातःहम तुम से और जिनजिन की तुम अल्लाहे के अतिरिक्त पूजा करते हो उनसब से बिल्कुल बरी हूं।हम तुम्हारे(आस्था का) खंडन करते हैं जबतक तुम अल्लाह की एकेश्वरवाद पर ईमान न लाओ हम में तुम में स्वेद के लिए घृणा प्रकट होगई।

जो व्यक्ति शिर्क(बहुदेववाद) से अवज्ञत हो और उससे दूर रहता हो,उसके लिए जरूरी है कि मुशरिक(बहुदेववादी) से घृणा रखे,इस्लाम का दावा करने वालों में अधिकांश संख्या इन दो प्रकार के लोगों पर ही आधारित है,वे शिर्क की वासतविक्ता से इस प्रकार अज्ञात होते हैं कि कलमा ए तौहीद और उसके तकाजों पर इस प्रकार अ़मल नहीं करपाते कि वे तौहीद के तकाजों को प्राप्त कर सकें,इस्लाम धर्म की वासतविक्ता से अज्ञात और धोखे के शिकार लोगों की संख्याकिस तरह अधिक है!

जब आप यह जान चूके हैं कि अल्लाह तआ़ला ने महकम(ठोस) आयतों में बहुदेववादियों को काफिर कहा है और उन्हें कुफ्र से चितित्र किया है,जैसाकि फरमायाः

﴿ما كان للمشركين أن يعمروا مساجد الله شاهدين على أنفسهم بالكفر﴾[24]

अर्थातःबहुदेववादियों के लिए यह उचित नहीं कि अल्लाह तआ़ला की मस्जिदों को आबाद करें हालांकि वे स्वयं अपने कुफ्र के आपही गवाह हैं।

(तो यह भी जानलें कि)इसी प्रकार ह़दीस में भी उन्हें काफिर कहा गया है।[25]

---

[22] سورة الزخرف: 26 - 27 .

[23] سورة الممتحنة: 4 .

[24] سورة التوبة: 17 .

शैखुल इस्लाम रह़ीमहुल्लाहु तआ़ला फरमाते हैंःसंदेश्वाहकों ने जिन बातों की सूचना दी,अहले तौह़ीद एवं अहले सुन्नत उनकी पुष्टि करते हैं,उनके आज्ञाओं का पालन करते हैं,उनके आदेशों को याद रखते हैं,उन्हें समझते और उनपर अ़मल करते हैं,गुलू(अत्यन्त) करने वालों की तह़रीफ(हैरफैर),झूटों के निराधार दावों और अंपढ़ों की तावील(अपनिर्वचन) से उन आदेशों को पवित्र रखते हैं,उन संदेशवाहकों का विरोध करने वालों से जिहाद करते हैं,यह समस्त कार्य अल्लाह की निकटता और केवल अल्लाह ही से पुण्य की आशा में करते हैं।

जबकि अंपढ़ एवं नादान और गुलू(अत्यन्त)पसंद लोग न आदेश एवं निषेध में कोई भेद भाव करते हैं,न सत्य एवं असत्य में अंतर करते हैं,न संदेशवाहकों के **उद्देश्य** को समझते हैं और न उनका आज्ञा एवं अनुगमन की इच्छा रखते हैं,बल्कि वे संदेशवाहकों के संदेश से भी अज्ञात होते हैं और केवल अपने **उद्देश्य** एवं लक्ष्यों का पालन करते हैं।[26]

व्याख्याताःशैखुलइस्लाम ने जिस सिथ्ती का उल्लेख किया है वह प्रथम उल्लेखित दानों प्रकार के लोगों की परिस्थितीके जैसा है।

रह गयी एक नई बात,जिसके संबंध में शैखलइस्लाम इब्ने तैमिया ने बात की है,वह यह कि निश्चित व्यक्ति को सर्वप्रथम काफिर न माना जाए,इसका कारण भी आप रह़ीमहुल्लाहु तआ़ला ने उल्लेख किया है जिसके आधार पर प्रमाण सिद्ध होने से पूर्व उसको काफिर मानना उचित नहीं है।

आप रह़िमहुल्लाहु ने फरमायाःसंदेशवाहकों की शिक्षाओं से अवज्ञत होने के पश्चात हम अवश्य रूप से यह जानते हैं कि आपकी उम्मत के लिए यह मशरू(धार्मिक) जाएज़(वैध) नहीं कि किसी मृत्यु को पूकारे,न पैगंबरों को,न नेक लोगों को और न अन्य मृत्यों को,न शब्द इस्तेगासा(सहायता प्राप्ती) के माध्यम से और न अन्य शब्दों के माध्यम से,न शब्द इस्तेआ़जह(शरण प्राप्ती) के माध्यम से और न अन्य शब्दों के माध्यम से,इसी प्रकार आपकी उम्मत(समुदाय) के लिए भी यह मशरू(धार्मिक) और जाएज़(वैध) नहीं कि किसी मृत्यु का

---

[25]प्रकाशित प्रति में इसी प्रकार शर्त का उत्तर वर्णित नहीं किया गया है,अल्लाह ही बेहतर जानता है कि यह लेखक की आलसा है अथवा(वास्तव)प्रतियों से शर्त का उत्तर साकित(हट गया) है,वैसे जो भी हो वार्तालाप का संदर्भ शिर्क एवं मुशरिक से मुक्ति और उनसे शत्रुता के व्याख्या में है,इस लिए वार्ता के समाप्त करने वाले को इस प्रकार छिपा हुआ मान सकते हैंः

इसी प्रकार ह़दीस में भी इसका उल्लेख आया है,जिससे शिर्क एवं मुशरिक की शतुत्रा अनीवार्य होती है।

[26]"अलइस्तेगासा फी अल रदे अललबकरी"2/499,मैंने उपरोक्त मूलपाठ की पुष्टि इसी पुस्तक से की है,उपरोक्त वाक्य पुर्ति इस प्रकार हैःताकि उन संदेशवाहकों से अथवा तो अपना लाभ प्राप्त करें,अथवा उनके माध्यम से अपने आपसे हानी को दूर करें।(प्रकाशकःमदारुलवतन.रियाज)

सज्दा करे अथवा किसी मृत्यु के सामने अल्लाह कासज्दा करे,अथवा इस प्रकार के अन्य कार्य करे,बल्कि हम जानते हैं कि आपने उन समस्त चीजों से मना फरमाया और हम यह भी जानते हैं कि यह शिर्क(बहुदेववाद) है जिसको अल्लाह और रसूल ने ह़राम(अवैध)कर दिया है।

किंतु चूंकि निरक्षरता का बोल बाला है,अनेक मोतअख्खेरीन(नव विद्वानों)के अंदर संदेशवाहकों की शिक्षा के प्रति ज्ञान की कमी पाई जाती है,इस लिए वे उपरोक्त चीजों के आधार पर मुशरिकों को काफिर नहीं मानते यहां तक कि उनके सामने यह ब्यान न किया जाए कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअ़त(इस्लाम धर्म) इस अ़मल के विरुद्ध है।समाप्त[27]

व्याख्याताःमालूम हुआ कि आप रह़िमहुल्लाहु तआ़ला ने उस कारण का उल्लेख किया है जिसके आधार पर किसी विशेषव्यक्ति को काफिर मानना उचित नहीं,यहां तक कि उसके सामने सारा मामला स्पष्ट न कर दिया जाए और बारबार उसे सचेत न किया जाए,क्योंकि वह एकेले ही उम्मत(समुदाय) के श्रेणी में आजाता है,जबकि कुछ विद्वानों ने इस आधार पर उसे काफिर माना है कि लोगों को प्रार्थना में शिर्क करने से मना किया गया है किंतु यह संभव नहीं कि उन(के सुधार के लिए)वही उपाय अपनाया जाए जो वह अपनाते हैं,जैसा कि हमारे शैख माह़म्मद बिन **अब्दुल वह्हाब** रह़िमहुल्लाहु के साथ दावत के आरंभ में हुआ कि जब वे लोगों को देखते कि वह ज़ैद बिन अलखत्ताब को पूकारते हैं तो कहते हैंः(अल्लाह ज़ैद से बहुत अच्छा है)ताकि विनर्म वार्ता के माध्यम से उन्हें शिर्क के इंकार का आदत डला सकें,एसा आप निती और घृणा न आने के लिए करते.

والله سبحانه أعلم ، وصلى الله على سيدنا محمد ، وعلى آله وصحبة وسلم[28]

[27]"अलइस्तेगासा फी अल रदे अललबकरी"2/499,मैंने उपरोक्त मूलपाठ की पुष्टि इसी पुस्तक से की है,

[28]«الدرر السنية في الأجوبة النجدية» (2/202 - 211).